Ge – यीशु ने दूसरी बार अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती
१७:२२-२३; मरकुस ९:३०-३२; लूका ९:४३बी-४५ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने दूसरी बार अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती १७:२२-२३; मरकुस ९:३०-३२; लूका ९:४३बी-४५

खोदाई: प्रेरित का दुःख उनकी अपेक्षाओं के बारे में क्या दर्शाता है? यहाँ और मरकुस 8:31बी में यीशु की शिक्षा के बीच मुख्य अंतर क्या है? इस अंतर के बारे में क्या महत्वपूर्ण है? आपको क्या लगता है शिष्यों ने पूछने से क्यों डरते थे?

चिंतन: प्रभु के साथ आपका शांत समय कब है? इसमें सबसे अधिक दखल किस चीज़ का दिखता है? आप उसे कैसे बदल सकते हैं? आप मसीहा से किस बारे में पूछने से डरते हैं?

येशुआ द्वारा बहरे और मूक राक्षस को बाहर फेंकने के बाद (देखें Gd– यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया) वे उस स्थान को छोड़कर निजी तौर पर गलील से होकर गुजरे। कैसरिया फिलिप्पी के क्षेत्र में मसीह के लिए बारहों के साथ अकेले रहना अब संभव नहीं था। टोरा-शिक्षकों को उसके पीछे हटने का पता चल गया था और वे हर मोड़ पर उससे युद्ध करने के लिए तैयार थे। एक बार जब भीड़ को राक्षस-ग्रस्त लड़के के उपचार के बारे में पता चला, तो उसके प्रेरितों के आगे के निर्देश के लिए किसी भी तरह की गोपनीयता रखना असंभव हो गया।

इसलिए मुख्य चरवाहे ने अपने कदम एक बार फिर दक्षिण की ओर मोड़े, गलील की पहाड़ियों और घाटियों से गुजरते हुए, शायद जॉर्डन के पश्चिम में। यह किसी अन्य सार्वजनिक गैलीलियन मंत्रालय को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से नहीं था, हालांकि उनका सार्वजनिक मंत्रालय यरूशलेम में मंदिर की दूसरी सफाई के साथ समाप्त होगा (देखें Iv– यीशु ने मंदिर क्षेत्र में प्रवेश किया और उन सभी को बाहर निकाल दिया जो खरीद और बेच रहे थे)। यीशु नहीं चाहते थे कि किसी को पता चले कि वे कहाँ थे, क्योंकि वह अपने प्रेरितों को शिक्षा दे रहे थे (मती १७:२२ए: मरकुस ९:३०-३१ए)। वह अपने शिक्षण मंत्रालय को बारह पर केंद्रित कर रहा था, और उसने इसे पूरा करने के लिए एकांत की तलाश की। येशुआ उनसे क्या कह रहा था, उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उसके शिष्यों को भीड़ के ध्यान भटकाने से दूर रहने की जरूरत थी। दूसरी बार वह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के संबंध में एक स्पष्ट बयान देता है (देखें Fy– यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की है), और दूसरी बार उन्हें समझ में नहीं आता कि वह किस बारे में बात कर रहा है।

जब मसीह शिक्षा दे रहे थे, उन्होंने अपने भाग्य को दोहराया और अपने प्रेरितों से

Ge – यीशु ने दूसरी बार अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती
१७:२२-२३; मरकुस ९:३०-३२; लूका ९:४३बी-४५ | 2

कहा: जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं उसे ध्यान से सुनो: मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में पकड़वाया जाने वाला है (मती १७:२२ बी; मरकुस ९:३१ बी) ; लूका ९:४३बी-४४)। इस दूसरी भविष्यवाणी में विश्वासघात का नया तत्व शामिल था। क्रिया पैराडिडोताई (धोखा दिया जाने वाला है), एक भविष्यवादी वर्तमान है। हालाँकि विश्वासघात अभी भी भविष्य में है, यह उतना ही अच्छा है जितना अभी हो रहा है। पैराडिडोताई का अनुवाद विश्वासघात के रूप में करने से, इसका तात्पर्य यह है कि यहूदा कार्रवाई का विषय है। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है सौंप दिया जाना या सौंप दिया जाना।

वे उसे मार डालेंगे। तब तक नवोदित मसीहा के संबंध में
रब्बी नेतृत्व में कई लोगों द्वारा स्पष्ट रूप से विरोध किया जा रहा था। यह न केवल कुछ यहूदी होंगे जो यीशु पर हमला करेंगे, बल्कि अंततः रोमन नागरिक अधिकारी भी होंगे। यह अच्छी तरह से प्रलेखित है कि महासभा को सभी बड़े मामलों में रोमनों के सामने समर्पण करना था। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ लोग आज भी मानते हैं कि “यहूदियों” ने येशुआ को मार डाला। हालाँकि, यह इतिहास की बात है कि उन्हें सूली पर लटका दिया गया था, जो कि यहूदी न्यायिक प्रणाली का हिस्सा भी नहीं था। एक अजीब तरीके से, यह भविष्यवाणी है कि पीड़ित सेवक को उसके अपने लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा और अंतिम निष्पादन के लिए अन्यजातियों को सौंप दिया जाएगा। उसकी अस्वीकृति में यहूदियों और अन्यजातियों दोनों का प्रतिनिधित्व किया गया है ताकि वह इसे बदल सके और सभी का मुक्तिदाता बन सके (Bz निर्गमन – पाप मुक्ति पर मेरी टिप्पणी देखें)।

स्पष्ट असफलता के बावजूद, कहानी के अंत में अच्छी खबर होगी, क्योंकि मसीह ने वादा किया है कि तीसरे दिन वह पुनर्जीवित हो जाएगा (मती १७:२३ए; मरकुस ९:३१सी)। इस स्पष्ट कथन के बावजूद, प्रेरितों को समझ नहीं आया। ईसा मसीह के समय यहूदी तानाख में मसीहा के संबंध में भविष्यवाणियों के बारे में भ्रमित थे। एक ओर तो उन्होंने माना कि मेशियाक को कष्ट सहना होगा, लेकिन दूसरी ओर उनका मानना था कि वह शक्ति और महिमा के साथ शासन करेगा। प्रकाशितवाक्य की ये दो पंक्तियाँ विरोधाभासी प्रतीत

Ge – यीशु ने दूसरी बार अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की मत्ती
१७:२२-२३; मरकुस ९:३०-३२; लूका ९:४३बी-४५ | 3

हुईं। यहूदी धर्मशास्त्र ने दो मसीहा के आने की शिक्षा देकर भ्रम को दूर करने की कोशिश की (देखें Mv– दो मसीहा की यहूदी अवधारणा); एक को कष्ट सहना और मरना, और दूसरे को शक्ति और महिमा में शासन करना। प्रेरित इस लोकप्रिय धर्मशास्त्र को स्वीकार करने से ऊपर नहीं थे। ईसा मसीह एक गौरवशाली राज्य की बात कर रहे थे जिसमें वह इस्राएल पर शासन करेंगे। पतरस, याकूब और यूहन्ना को उस राज्य और उसमें प्रभु की महिमा का दर्शन हुआ; इस प्रकार, उनका ध्यान मसीहा के शासनकाल की महिमा पर केंद्रित था। अपने समय के अन्य यहूदियों की तरह, वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि उनके प्रिय स्वामी को कष्ट उठाना पड़ेगा और मरना पड़ेगा।

यहां तक कि निकटतम शिष्यों को भी यह समझ में नहीं आया कि ये सभी विवरण एक साथ कैसे फिट होंगे। वे दुःख से भरे बिना नहीं रह सके। और बारह दुःख से भर गए (मती १७:२३बी) क्योंकि उन्हें समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब था। राजा मसीहा यरूशलेम में क्यों नहीं जा सके और उनके समय में अपना सिंहासन स्थापित क्यों नहीं कर सके? कष्ट क्यों? यह उन से छिपा रहा, यहां तक कि वे उसे समझ न सके, और उस से इसके विषय में पूछने से डरते थे (मरकुस ९:३२; लूका ९:४५)। क्या यीशु से यह पूछने का डर था कि उसने क्या कहा था, क्या यह आगे आने वाली पीड़ा की वास्तविकता का सामना करने के डर के कारण था? या क्या ऐसा इसलिए था क्योंकि पहले जब उन्होंने एलिय्याह के आने के बारे में पूछा था, तो वे यीशु के उत्तर को समझ नहीं पाए थे? या क्या वे पतरस की तरह डांटे जाने से डरते थे? लेकिन उनका कारण जो भी हो, वे यीशु से इसके बारे में पूछने से डरते थे।891 नतीजतन, जब उनकी मृत्यु हुई, तो इससे वे घबरा गए।